अच्छे अंक पाने के 13 पक्के तरीके

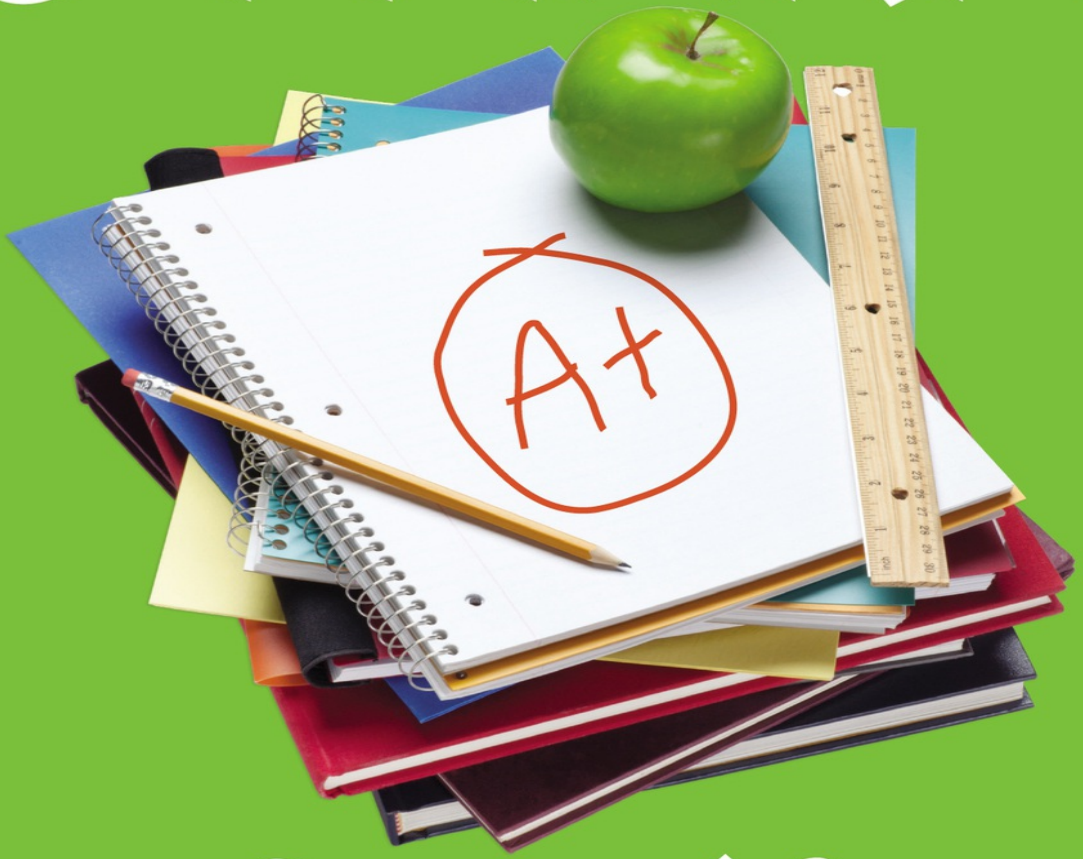

अश्विन सांघी
अशोक राजानी

अनुवादः दिपांशु गोयल

वैस्टलैंड पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड

अच्छे अंक पाने के 13 पक्के तरीके

अश्विन सांघी

अश्विन सांघी भारत में सबसे ज़्यादा बिकने वाले अंग्रेजी उपन्यास के लेखक हैं। आपने कई बेस्ट सेलिंग किताबें लिखी हैं जैसे कि, 'द रोज़ाबाल लाइन', 'चाणक्याज़ चैंट', 'द कृष्णा की', 'द सियालकोट सागा। जेम्स पैटरसन के साथ मिलकर आपने न्यूयॉर्क टाइम्स का मशहूर बेस्ट सेलिंग क्राइम थ्रिलर 'प्राइवेट इंडिया' लिखा। सांघी ने '13 स्टेप्स टू ब्लडी गुडलक' के नाम से नॉन फिक्शन भी लिखा है। इसके साथ ही आपने सह-लेखक के तौर पर '13 स्टेप टू ब्लडी गुड वेल्थ' किताब भी लिखी है। आपका नाम फोर्ब्स इंडिया की सेलिब्रिटी 100 की सूची में शामिल किया गया और आप क्रॉसवर्ड पॉपुलर चॉइस अवॉर्ड के विजेता रहे हैं। आपकी पढ़ाई मुंबई के कैथीड्रल एंड जॉन कॉनन स्कूल और सेंट जेवियर कॉलेज में हुई। आपने येल यूनीवर्सिटी से एमबीए की डिग्री हासिल की है। अश्विन सांघी के परिवार में आपकी पत्नी अनुशिखा और बेटा रघुवीर हैं।

आप सांघी से निम्नलिखित माध्यमों से संपर्क कर सकते हैं-

वेबसाइट- www.sanghi.in

फेसबुक- www.facebook.com/shawnhaigins

ट्विटर- www.twitter.com/ashwinsanghi

यू ट्यूब- www.youtube.com/user/ashwinsanghi

इंस्टाग्राम- instagram.com/ashwin.sanghi

लिंक्डइन- www.linkedin.com/in/ashwinsanghi

अशोक राजानी

अशोक एल. राजानी ने सेंट मेरी स्कूल, चेन्नई, लायला कॉलेज, चेन्नई और गुंडी के कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग से पढ़ाई की है। आपने 1978 में डिपार्टमेंटल ऑफिसर के रूप में आंध्रा बैंक में नौकरी शुरू की, बैंकिंग परीक्षा (सीएआईआईबी) पास की, एमबीए (वित्त) पूरा किया और बैंक के ट्रेनिंग कॉलेज में अध्यापन कार्य भी किया। सेवानिवृत्त होने के बाद आपने एपीए दिशानिर्देशों का अध्ययन किया और भारतीय तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभागियों के इंजीनियरिंग से संबंधित तकनीकी पत्रों और शोध प्रबंधों का संपादन किया। आपको कम्यूनिकेशन स्किल और प्रबंधन पर बीबीए और एमबीए के छात्रों के लिए कक्षाएं भी लीं। इसके साथ ही भारतीय, ब्रिटिश तथा अमेरिकी लेखकों की बहुत सी किताबों का संपादन भी किया।

अशोक पांच भाषाएं बोलते हैं और चेन्नई में अपनी पत्नी सुलोचना के साथ रहते हैं जो एक स्त्री रोग विशेषज्ञ हैं। आपका एक बेटा, सिद्धार्थ और दो पोते हैं। अध्यापन आपका पहला प्यार है।

आप उनसे निम्नलिखित माध्यमों से संपर्क कर सकते हैं–

फेसबुक: www.facebook.com/Ashok Lr

लिंक्डइन: http://in.linkedin.com/in/ashok-lr-20769210

दिपांशु गोयल

आप पेशे से पत्रकार हैं। आप राजस्थान के रहने वाले हैं। आपने भारतीय जनसंचार संस्थान (आईआईएमसी),दिल्ली से पत्रकारिता की पढ़ाई की है। साथ ही आपने दूरदर्शन समाचार के साथ 10 वर्षों तक पत्रकार के तौर पर काम भी किया है। आप वेबजगत के सक्रिय लेखकों में से एक हैं। आपका 'दुनियादेखो' के नाम से स्वयं का यात्रा ब्लॉग और वेबसाइट भी है।

अच्छे अंक पाने के 13 पक्के तरीके

अश्विन सांघी
अशोक राजानी
अनुवाद
दिपांशु गोयल

First published in English in 2017 by Westland Publications Private Limited

First published in Hindi in 2018 by Westland Publications Private Limited in association with Yatra Books

61, 2nd Floor, Silverline Building, Alapakkam Main Road, Maduravoyal, Chennai 600095

Westland and the Westland logo are the trademarks of Westland Publications Private Limited, or its affiliates.

Copyright © Ashwin Sanghi, 2018

The views and opinions expressed in this work are the author's own and the facts are as reported by him, and the publisher is in no way liable for the same.

All rights reserved

No part of this book may be reproduced, or stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise, without express written permission of the publisher.

विषय सूची

1. भूमिका

2. प्रस्तावना

3. पहला क़दम: BUS—(B)ELIEVE विश्वास, *(U)NLEARN* भुला देना *AND 1 WORK (S)MART* स्मार्ट तरीके से काम करना

4. दूसरा क़दम: फेल टू प्लान = प्लान टू फेल

5. तीसरा क़दम: कक्षा में समझने की कोशिश करो

6. चौथा क़दम: कक्षा के बाद भी नियमित अध्ययन करें

7. पांचवां क़दम: पढ़ने के विज्ञान में महारथ हासिल करें

8. छठा क़दम: अपनी स्मरण शक्ति बढ़ायें

9. सातवां क़दम: लगातार अभ्यास अभ्यास से आप बेहतर बनते हैं

10. आठवां क़दम: अपना नेटवर्क बनायें

11. नौवां क़दम: अतिरिक्त योग्यताओं को बढ़ाओ

12. दसवां क़दम: आसपास के वातवरण को सही रखें

13. ग्यारहवां क़दम: दिमाग और शरीर का संतुलन बनाएं

14. बारहवां क़दम: परीक्षा की रणनीति

15. तेरहवां क़दम: अंकों से आगे

16. चौदहवां

17. संदर्भ

भूमिका

साल 2014 में मैंने जब '13 स्टेप्स टू ब्लडी गुड लक' लिखी तो मुझे पाठकों के बहुत से संदेश मिले जिसमें पाठकों ने लिखा कि इस किताब ने जिंदगी के बारे में नए तरीके सोचने का रास्ता दिखाया। इससे श्रृंखला की दूसरी किताब '13 स्टेप टू ब्लडी गुड वेल्थ' लिखने की प्रेरणा मिली। यह किताब मैंने सुनील दलाल के साथ मिलकर लिखी, पैसा कमाने को लेकर उनका अलग ही नज़रिया है।

पहली किताब के बाद मुझे जो संदेश मिले उनमें से एक किसी छात्रा का था। जिसने कहा कि क्या '13 कदम' जैसी किताब पढ़ने वाले छात्रों के लिए भी लिखी जा सकती है जिससे उन्हें बेहतर तरीके से पढ़ने और अच्छे अंक हासिल करने में मदद मिल सके? मुझे इस किताब को लिखने के लिए तुरंत अशोक राजानी का नाम दिमाग में आया।

बहुत वर्ष पहले जब मैंने अपनी भारत श्रृंखला की किताब, जिसे 'द कृष्णा की' कहा गया था, प्रकाशित की थी तो मुझे एक अपरिचित का लंबा सा ईमेल मिला था। उस अंजान व्यक्ति ने किताब में की गई गलतियों की तरफ ध्यान दिलाया था जो तर्क, शोध और व्याकरण से जुड़ी थी। ये गलतियां तीन बार के संपादन के बावजूद हुई थीं। वह अपरिचित व्यक्ति अशोक राजानी ही थे। बाद में उन्होंने *13 स्टेप टू ब्लडी गुड लक* का संपादन भी किया।

अशोक ने बहुत सी नौकरियां की थीं और सभी में किसी ना किसी तरह अध्यापन शामिल रहा था। स्कूल के दिनों में उन्होंने अपने भतीजे और भतीजियों को पढ़ाया । उसके बाद इंजीनियरिंग के समय उन्होंने समूह में पढ़ाई की । उसके बाद उन्होंने अपने बच्चे को पढ़ाया। स्टाफ ट्रेनिग कॉलेज में बैंक कर्मियों के लिए कंप्यूटरीकरण से जुड़ी कक्षाएं लीं। सहयोगियों को बैंक से जुड़ी परीक्षाओं में मदद की। बीबीए और एमबीए के छात्रों की कक्षाएं लीं। पीचडी के शोधार्थियों की मदद की। अपने पोतों को पढ़ाया... यह सूची बहुत लंबी है।

मेरा मानना है कि उनके विविध और समृद्ध अनुभव से उन्हें एक कॉलेज के प्रोफेसर या एक कोचिंग क्लास अध्यापक की तुलना में अध्ययन, सीखने और अंक लेने से संबंधित विषय में एक खास अंतर्दृष्टि मिलती है। विशेषज्ञों के पास एक संकीर्ण दृष्टि होती है, जबकि मैं चाहता था कि हम एक ऐसी किताब पेश करें जिसका क्षेत्र कहीं अधिक व्यापक हो। मुझे लगता है कि हम ऐसा करने में सफल हुए हैं।

ऐसा कहा जाता है कि कुछ शुरू करने से पहले आपका महान होना ज़रूरी नहीं है, लेकिन महान बनने के लिए शुरुआत आपको ही करनी होगी। तो आप किसका इंतज़ार कर रहे हैं? कृपया शुरू करें!

अश्विन सांघी

मुंबई, 2017

प्रस्तावना

जब अश्विन सांघी (जिनसे मैं कभी मिला नहीं था। *13 स्टेप टू ब्लडी गुड लक* किताब के संपादन के समय उनसे बातचीत हुई थी।) ने जब मुझे *13 स्टेप टू ब्लडी गुड मार्क्स* का सह लेखक बनने के लिए कहा तो मैंने तुरंत हां कर दी। उनके इस निमंत्रण से मुझे अपने सहयोगियों और छात्रों के साथ बिताई बहुत सी घटनाएं याद आईं क्योंकि मैंने उन्हें पढ़ाते हुए काफी कुछ सीखा था। इस दौरान मुझसे छात्रों और उनके अभिभावकों ने बहुत से प्रश्न पूछे थे। उनमें से कुछ बार-बार दोहराए जाने वाले प्रश्नों, विशेष प्रश्नों और टिप्पणियों को नीचे लिखा है:

1. यह सब सीखना क्यों ज़रूरी है?

2. हम इस तरह की जटिल सामग्री को कैसे याद करें?

3. प्रत्येक अध्यापक केवल एक विषय सिखाता है। जबकि छात्रों से कई विषयों को सीखने की उम्मीद की जाती है, जो कि अनुचित है।

4. जब हमारे पास कैलक्यूलेटर और कंप्यूटर है तो हम गणित क्यों सीखें?

5. मेरे परिवार के लिए बच्चे का परीक्षा पास करना ही बहुत है। मेरे बच्चे पर अनावश्यक दबाव ना डालें।

6. कल मैंने मंदिर में विशेष पूजा की है। मेरे बच्चे को अच्छे अंक ज़रूर मिलेंगे।

7. मैं एक एथलीट बनना चाहता हूं, तो मुझे पढ़ाई करने की क्या ज़रूरत है? मुझे खेलों से जुड़े आरक्षण का फायदा मिल जाएगा।

8. मैं एक चित्रकार बनना चाहता हूं। आप मुझे विज्ञान पढ़ने पर क्यों मजबूर कर रहे हैं?

9. अगर मैं इंजीनियर बनता हूं तो मुझे इतिहास, भूगोल, अंग्रेज़ी या दूसरी भाषाओं को सीखने की क्या ज़रूरत है?

10. मैं यह जानता था लेकिन भूल गया। आप इतना सब कैसे याद कर लेते हैं?

मैंने कुछ अच्छे प्रश्न आखिर के लिए बचा रखे हैं। ये ऐसे प्रश्न हैं जिनका मेरे पास कोई जवाब नहीं था जैसे, क्या आपके पास बिना अतिरिक्त मेहनत किए या बिना पढ़े अच्छे अंक पाने का कोई शॉर्टकट है?

मैं कभी पूर्णकालिक अध्यापक नहीं रहा और ना ही बी.एड. की परीक्षा पास की है । मैंने इस प्रश्न को काफी पढ़े लिखे और अनुभवी अध्यापकों के सामने रखा। पहले तो उन्होंने इसे मज़ाक ही समझा लेकिन जब उन्हें लगा कि मैंने काफी गंभीरता से पूछा है तो उन्होंने कुछ उत्तर दिए जिन्हें मैंने नीचे लिखा है:

1. क्या आप मज़ाक कर रहे हैं? अगर सही में कोई शॉर्टकट होता तो फिर हमारी क्या ज़रूरत है?

2. बहुत सरल सी बात है, मेहनत से पढ़ाई करो और आपको अच्छे अंक मिल जाएंगे। क्यूईडी यानी इति सिद्धं।

3. अगर कक्षा में ध्यान लगाएंगे तो आपको पढ़ाई की ज़रूरत ही नहीं है। सारे पाठ आपके दिमाग में दर्ज हो जाएंगे।

4. कक्षा से वापस आते ही पाठ को दोहराओ। कल पढ़ाए जाने वाले पाठ की आज ही तैयारी करो।

5. अपने भोजन को बदलो। पर्याप्त नींद लो।

6. दूसरे ट्यूशन या कोचिंग कक्षाएं बेकार हैं। कोचिंग करनी है तो मेरे पास आओ। मैं बस इतना पैसा…

7. बड़े आकार के अक्षरों में लिखो और परीक्षा में जितनी ज़्यादा हो सके उतनी उत्तरपुस्तिकाएं भरो। परीक्षक ज़्यादा उत्तरपुस्तिकाओं से खुश होते हैं।

8. ध्यान मत भटकने दो। हमारे समय में टीवी, मोबाइल या इंटरनेट जैसी चीज़ें नहीं थीं। इन्हें बंद कर देना चाहिए।

9. कुछ खास मंत्र हैं जिनका पाठ करो। आप जानना चाहते हैं वे क्या हैं?

10. क्या आपने सम्मोहन को आज़माया है?

मुझे अहसास हुआ कि अभी तक मुझे उत्तर नहीं मिला, तो मैंने सोचा कि पढ़ाई करने का सरल और प्रभावी तरीका ढूंढ़ने के लिए मुझे छात्रों के पढ़ाई करने के तरीके का विश्लेषण करना होगा। मेरा खुद का अनुभव और छात्रों के साथ बिताया लंबा वक्त भी इसमें काम आया।

पहली चीज़ मुझे समझ आई कि अलग-अलग पाठ्यक्रमों को पढ़ने के बहुत से अलग तरीके थे। उदाहरण के लिए, प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षा तैयारी और आईआईटी, जेईई की तैयारी में बहुत अंतर है और इनके मुकाबले सीबीएसई की कक्षा 10 या कैट की परीक्षा तैयारी में बहुत अंतर है। एक समय तो मुझे लगने लगा कि मैं ऐसा कोई तरीका नहीं खोज सकता जिसे एक साथ सभी परीक्षाओं पर लागू किया जा सके। मुझे विश्वास भी नहीं था कि सभी परीक्षाओं के लिए पढ़ने के एक तरीके का विचार काम करेगा कि नहीं।

इसलिए शोध के दौरान मैंने अपनी खोज के बारे में किसी को नहीं बताया। इसी समय अश्विन मिले। उनका भी विचार था कि परीक्षा या पाठ्यक्रमों से इतर सभी परीक्षाओं के लिए एक सामान्य तरीका खोजा जा सकता है। उनके उत्साह और विश्वास को देखकर मुझे लगा कि मैं ऐसा कर सकता हूं। हालांकि मैंने अश्विन की चुनौती को स्वीकार किया लेकिन मुझे इस बात को स्वीकार करने में कुछ समय लगा।

पहली किताब लिखना बहुत अनोखा अनुभव होता है। अतीत में, मैं एक शिक्षक के रूप में व्यंग्यकार, एक संपादक के रूप में कठोर, समीक्षक के रूप में सख्त, और परीक्षक के रूप में निर्दयी रहा हूं। लेकिन इस पुस्तक को लिखने से मुझे लिखे गए शब्दों की अहमियत का अंदाज़ा हुआ। एक लंबे और कठोर परिश्रम के बाद। यह किताब अब तैयार है।

अशोक राजानी,
चेन्नई, 2017

पहला क़दम: BUS—(B)ELIEVE, (U)NLEARN AND WORK (S)MART

1. विश्वास: स्वयं में विश्वास करना

2. भुला देना: पुराने पड़ चुके तरीकों को भुला देना

3. स्मार्ट: केवल कठोर मेहनत की जगह स्मार्ट तरीके से काम करना

विश्वास

अमेरिका के 26 वें राष्ट्रपति थियोडोर रूज़वेल्ट ने एक बार कहा था, 'विश्वास करो कि आप कर सकते हैं और आपका आधा काम हो जाएगा ।' यह बहुत महत्वपूर्ण है। आपको यह विश्वास रखना होगा कि आप यह काम कर सकते हैं।

कहा जाता है कि एक बार एक आदमी ज्ञान की खोज में यूनान के दार्शनिक, साक्रतीज़ से मिलने गया। उसे आश्चर्य हुआ कि साक्रतीज़ उसे लेकर एक झील पर गए और उसका सिर पानी में डुबा दिया। वह व्यक्ति सांस लेने के लिए बाहर आने की कोशिश करने लगा लेकिन साक्रतीज़ ने उसका सिर डुबोए रखा।

बाद में उस व्यक्ति ने साक्रतीज़ से पूछा कि उन्होंने उसे लगभग डुबा क्यों दिया था, साक्रतीज़ ने जवाब दिया, 'जब तुम पानी के अंदर थे तो तुम्हें सबसे ज़्यादा किसकी ज़रूरत महसूस हुई?' 'हवा,' उस व्यक्ति ने उत्तर दिया।

साक्रतीज़ ने कहा, 'जब ज्ञान पाने की तुम्हारी चाह इतनी बढ़ जाए जितनी की सांस लेने की थी, तो तुम्हें ज्ञान प्राप्त हो जाएगा।'

आप इस किताब को पढ़ रहे हैं इसका मतलब है कि आप बेहतर तरीके से पढ़ने के साथ ज़्यादा अंक भी हासिल करना चाहते हैं। आपको यह ध्यान रखना होगा कि यह किताब कोई जादू की छड़ी नहीं है, यह तो आपको केवल एक रास्ता दिखा सकती है। लेकिन यह रास्ता आपको खुद ही तय करना होगा और बेहतर अंक पाने के लिए आपको लगातार मेहनत करनी होगी।

आप मेरा विश्वास करें। आपमें वह सब कुछ है जो आपको एक सर्वश्रेष्ठ छात्र बना सकता है। क्या आप ऐसा नहीं सोचते? क्या आपने श्रीकांत बोल्ला के बारे में सुना है?

श्रीकांत का जन्म आंध्रप्रदेश के एक गांव में हुआ था। वे जन्म से ही देख नहीं सकते थे। पड़ोसियों ने उनके माता-पिता को सलाह दी कि वे श्रीकांत को जान से मार दें । लेकिन मात्र 20000 रुपए सालाना कमाने वाले उनके माता-पिता ने इस तरह की सलाहों पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने बहुत प्यार के साथ उनकी परवरिश की।

दृष्टिहीन और गरीब होने के कारण गांव के स्कूल में श्रीकांत को सबसे पीछे की बैंच पर बैठना पड़ता था। उन्हें दूसरे बच्चों के साथ खेलने की इजाज़त भी नहीं थी। उनके पिता ने उनका दाखिला हैदराबाद में विशेष बच्चों के लिए बने एक स्कूल में करवा दिया। यहां ना सिर्फ उन्होंने शतरंज और क्रिकेट खेलना सीखा बल्कि उसमें महारथ भी हासिल की। उन्होंने ना सिर्फ अपनी कक्षा में उच्च स्थान हासिल किया बल्कि उन्हें भूतपूर्व राष्ट्रपति ए पी जे अब्दुल कलाम के लीड इंडिया प्रोजेक्ट में भी काम करने का मौका मिला।

उन्होंने 90% से भी ज़्यादा अंकों से साथ अपनी दसवीं की परीक्षा पास की। लेकिन उनकी विकलांगता के कारण उन्हें विज्ञान के विषय में दाखिला नहीं मिला। श्रीकांत ने इसके खिलाफ कानूनी लड़ाई लड़ी और आखिरकार सरकारी आदेश से उन्हें 'खुद की जोखिम' पर विज्ञान में दाखिला मिला। यहां तक की उन्होंने अपनी सभी किताबों को ऑडियो बुक में बदल लिया। उनकी कड़ी मेहनत का ही नतीजा था कि उन्हें 12वीं कक्षा में 98% अंक हासिल हुए।

आईआईटी, बिट्स और ऐसे कई दूसरे बड़े इंजीनियरिंग संस्थानों ने दृष्टिहीन होने के कारण उन्हें प्रवेश परीक्षा में नहीं बैठने दिया। लेकिन श्रीकांत अमेरिका के प्रतिष्ठित मेसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी (MIT) में दाखिला पाने वाले दुनिया के पहले दृष्टिहीन बने।

मेसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी (MIT) में पढ़ाई पूरी करने बाद उन्होंने अमेरिका में नौकरी के प्रस्तावों को ठुकरा कर भारत वापस आने का फैसला किया। वह भारत वापस आकर रोजगार पैदा करने की दिशा में काम करना चाहते थे। आज श्रीकांत एक उद्यमी हैं। उनके चार कारखाने हैं जहां वे पर्यावरण

अनुकूल पैकेजिंग का सामान बनाते हैं। उनका एक पूरी तरह सौर ऊर्जा से चलने वाले संयंत्र जल्द ही आंध्रप्रदेश में चालू होने वाला है। उनके यहां काम करने वाले लोगों में 70% लोग विकलांग हैं और उनकी सालाना बिक्री 50 करोड़ रुपए को पार कर गई है।

श्रीकांत अपने निश्चय को दोहराते हुए कहते हैं: 'अगर दुनिया मुझे कहती है कि श्रीकांत तुम कुछ नहीं कर सकते तो मैं उसे पलट कर कहता हूं कि मैं कुछ भी कर सकता हूं।'

इंक एंड ग्रो रिच के लेखक नेपोलियन हिल ने कहा था, 'मनुष्य का दिमाग जो कुछ सोच सकता है और विश्वास कर सकता है, वह उन सब को हासिल कर सकता है।' आगे बढ़ते समय आपको भी इसी बात को ध्यान में रखना होगा कि आप जो चाहें हासिल कर सकते हैं। विश्वास के बिना कुछ हासिल नहीं होगा।

प्राचीन भारत में गुरु अपने शिष्यों से 'संकल्प' लेने के लिए कहते थे। संस्कृत भाषा के इस शब्द का मतलब होता है एक विचार या संकल्पना जिसने आपके दिल और दिमाग में जगह बना ली है। यह कुछ हासिल करने की दृढ़ प्रतिज्ञा की तरह है। यह कुछ हासिल करने के लिए आपका लक्ष्य है। अब आपकी बारी है कि कुछ संकल्प लें और उसे पूरा कर दिखाएं।

भुला देना

अल्बर्ट आइंस्टाइन एक महान वैज्ञानिक थे। उन्होंने मूर्खता को परिभाषित करते हुए कहा था, 'बार-बार एक ही काम को करते हुए अलग परिणाम पाने की आशा रखना ही मूर्खता है।' दुर्भाग्य से पढ़ाई के समय अधिकतर लोग यही करते हैं। मेरी कोशिश है कि आप बार-बार जो गलती कर रहे हैं उसे रोका जाए।

चलिए मान लेते हैं कि आप कुछ नया सीखना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, आप अधिकतर अंग्रेज़ी में लिखते हैं और उसके लिए रोमन लिपी का उपयोग करते हैं और अब आप नस्तालीक लिपी का इस्तेमाल कर उर्दू लिखना सीखना चाहते हैं। आपको बाईं से दाईं तरफ लिखने की आदत है लेकिन उर्दू के लिए आपको दाईं से बाईं तरफ लिखना होगा। साथ ही आपको नई वर्णमाल के अक्षर और लिखने के तरीके को भी सीखना होगा। एक तरह से देखें तो आपको बाई से दाईं तरफ लिखने की अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति को छोड़ना होगा।

लेखक और भविष्यवेत्ता एलविन टोफलर ने कितनी सही बात कही थी, '21वीं सदी में अशिक्षित वे नहीं होंगे जो पढ़ना या लिखना नहीं जानते होंगे बल्कि वे होंगे जो सीखने, सीख कर भूल जाने और फिर से सीखने की कला को नहीं जानते होंगे।'

मैं आपको लिखने के एक बिल्कुल नए तरीके के बारे में बता रहा हूं। मैं चाहता हूं कि आप प्रभावी तरीके से पढ़ना सीखें जैसा कि आपने पहले कभी ना किया हो। नए तरीकों को सीखने के क्रम में आपको पढ़ाई के उन तरीकों को भूलना होगा जो अब तक आपके लिए बेहतर साबित नहीं हुए हैं।

स्मार्ट, नॉट हार्ड

हमारे साथ पढ़ने वाले बहुत से दोस्त ऐसे होते हैं जो सब कुछ आसानी से समझ लेते हैं। उनको शायद ही कभी पढ़ते देखा हो, उनके पास बहुत सा खाली समय होता है, उस समय में वे खेलते हैं, दोस्तों से मिलते हैं बातें करते हैं और इन सबके बावजूद उनके बहुत अच्छे अंक आते हैं। वे यह सब कैसे कर लेते हैं? इस किताब में मैं उनके द्वारा इस्तेमाल किए गए तरीकों के बारे में बताऊंगा।

आपके मन में यह सवाल आ रहा होगा कि अगर ये तरीके इतने ही बेहतर हैं तो फिर इन्हें स्कूलों में क्यों नहीं सिखाया जाता? मैंने अधिकतर यही देखा है कि अध्यापक और माता-पिता बच्चों से हमेशा कड़ी मेहनत करने की बात करते हैं लेकिन यह मेहनत कैसे की जाए इस बारे में कोई कुछ नहीं बताता। बहुत मेहनत से पढ़ाई करने के बजाय स्मार्ट तरीके से कैसे पढ़ाई की जाए यही इस किताब में बताया जाएगा। मैं एक कहानी के जरिए दोनों के बीच का अंतर समझाता हूं।

एक बार एक राजा था जिसके तीन बच्चे थे। राजा बूढ़ा हो रहा था इसलिए उसने सोचा कि किसी बेटे को उत्तराधिकारी चुना जाए। उसने अपने तीनों बच्चों को बुलाया और उन्हें एक काम पूरा करने को कहा। उन तीनों में से हर एक को एक कमरा किसी एक चीज से इस तरह भरना था कि कमरे में कोई जगह खाली ना रहे। उन सभी को काम पूरा करने के लिए कुछ घंटों का समय दिया गया।

तीनों राजकुमार अपने-अपने कमरे को भरने की कोशिश में लग गए। पहले वाले ने अपने कमरे को पत्थरों से भरने का सोचा। उसने नौकरों को काम पूरा करने के लिए कहा लेकिन इस काम में बहुत मेहनत बहुत थी इसलिए उन्हें बहुत समय लग रहा था।

दूसरे राजकुमार ने कमरे को भूसे से भरने का सोचा। पत्थरों की तुलना में इसे उठाना आसान था। दूसरे राजकुमार ने दिए गए समय में पूरे कमरे को भर दिया।

तीसरा राजकुमार किसी द्रव्य से भरी बोतल लाया और कमरे में चला गया। उसने कमरे की खिड़कियां और दरवाजे बंद किए और द्रव्य को पूरे कमरे में छिड़क दिया।

समय पूरा होने के बाद राजा सभी कमरे देखने के लिए आया। पहला कमरा पूरा नहीं भर पाया था क्योंकि पत्थरों से भरने का काम इतना मेहनत भरा था कि समय से काम पूरा नहीं हो पाया।